Shram Sarathi

Annual Progress Report

2022-23

Geographical presence across South Rajasthan

Three branches and a sub-branch in the South Rajasthan region

- Gogunda 2009 → Sayara → 230 Villages
- Salumbar 2014 → Bhabrana → 66 Panchayat
- Kherwara 2018 → Four districts

Shram Sarathi's Leading Programs

Financial Support

- Micro-credit - 3154 families
- Returnable grants - 1500 families
- Fresh start ~50 families

Social Protection

- Fraud Prevention ~ 3 Lakh returned
- Insurance ~14 Lakh claims
- Credit bureau reports ~ 250+

Financial & Digital Banking Services

- Retailers (80), Avg 50 Lakh trans per month
- Financial & digital literacy clinics - 75+
- Investment & savings - 1000 families

Consumer education & research

- Literacy meetings
- Research reports (local & external)

Legend: Legacy program | New intervention | Launched in new format

*Few of these programs may cover multiple buckets

Credit operations

Operational snapshot (Year-on Year)

PARTICULARS	2016-17	2017-18	2018-19	2019-20	2020-21	2021-22	2022-23
Number of Disbursements	2582	3478	6102	4956	1585	807	961
Value of disbursements (INR lakhs)	307	499	1084	1101	478	291	329
Number of Active clients	2837	4375	7542	8594	6696	5841	2834
Portfolio outstanding (INR lakhs)	237	430	926	1005	886	689	542
External outstanding debt (INR lakhs)	133	262	664	860	495	320	134

Returnable grants

Returnable grant

Emergency management		Enterprise promotion	
Phase - 1	Phase - 2	Phase - 1	Phase - 2
280 families	1300 families	230 families	350 families
INR 15,000 per family in form of coupons	INR 10,000 per family in form of coupons	INR 35,000 per family (avg)	INR 35,000 per family (avg)
INR 42 Lakh	INR 1.3 cr	INR 80 Lakh	INR 1.2 cr

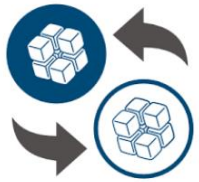

Returnable grant - example

Fighting Financial Fraud

Fighting Financial Fraud

दैनिक भास्कर उदयपुर 16-12-2022

न बैंक दिला पाया, न कियोस्क देने को तैयार हुए, 10 माह बाद लोकपाल ने दिलाए खाते से गए 10 हजार रु.

भास्कर न्यूज | गोगुंदा

थाना क्षेत्र के जिवाई गांव की छतरी बाई के बैंक खाते से गायब हुए 10 हजार रुपए आखिर 10 माह बैंकिंग लोकपाल की मदद से उसे वापस मिल गए। एसबीआई की कियोस्क संचालिका निशा गहलोत को उसके खाते में यह राशि ट्रांसफर करनी पड़ी। जानकारी के अनुसार छतरी बाई ने इसी साल फरवरी में बैंक ऑफ बड़ौदा के खाते में 20 हजार रु. जमा कराए। इसके बाद 11 फरवरी को वह पैसे निकालने के लिए गोगुंदा आई। वह एक बैंक बीसी (बैंक कियोस्क) पर गई, फिर दूसरे और बाद में तीसरे पर। एक के बाद एक तीनों ने अंगूठा लगवाया और पैसे निकालने की कार्रवाई शुरू की। तीनों पर पैसे नहीं निकले और सर्वर डाउन को कारण बताया। छतरी बाई लौटी ही थी कि उसके पास 10 हजार रुपए निकलने का मैसेज आ गया। उसने वापस तीनों कियोस्कों पर जाकर पूछताछ की, लेकिन तीनों ने संतुष्टिपूर्ण जवाब नहीं दिया। इसके बाद वह उदयपुर में बैंक ऑफ बड़ौदा (बीओबी) की ब्रांच में पहुंची और अपने खाते की पासबुक प्रिंट कराई तो पता चला कि 11 फरवरी को उसके खाते से 10 हजार रुपए विड्रॉल हुए, लेकिन यह पता नहीं चल पाया कि किस कियोस्क से विड्रॉल हुए।

कहीं से भी न्याय नहीं मिलने पर छतरी बाई ने क्षेत्र में वित्तीय साक्षरता का काम कर रहे राजस्थान श्रम सारथी एसोसिएशन के कार्यकर्ताओं को अपनी पीड़ा बताई। उनके सहयोग से अप्रैल से दिसंबर तक कई जगहों पर शिकायतें की गईं। 13 अप्रैल को मेल से बीओबी की सीनियर ब्रांच में शिकायत की। इसके बाद 23 अप्रैल को रिमाइंडर भिजवाया। फिर 20 मई को उदयपुर के लीड बैंक को शिकायत भेजी। लीड बैंक ने शिकायत को बीओबी को भेजा। 10 नवंबर को बैंकिंग लोकपाल को ऑनलाइन शिकायत भेजी। आखिर बैंकिंग लोकपाल में शिकायत का ही असर हुआ। इसके बाद एसबीआई के कियोस्क से पैसे निकलने की जानकारी सामने आई। फिर बीओबी को आईडी के बारे में बताकर इस कियोस्क के खिलाफ एफआईआर दर्ज करने को कहा। तब छतरी बाई ने 5 दिसंबर को कियोस्क संचालिका के खिलाफ गोगुंदा थाने में रिपोर्ट दी, लेकिन पुलिस ने भी कोई कार्यवाही नहीं की। अब गुरुवार को कियोस्क संचालिका दो-तीन लोगों के साथ महिला के घर पहुंची और 10 हजार रुपए उसके खाते में ट्रांसफर किए। छतरी बाई ने बताया कि उसे 2000 रुपए ज्यादा दिए।

कियोस्क संचालिका बोली-पैसे जरूर ज्यादा आए, लेकिन पता नहीं था इस महिला के हैं

कियोस्क संचालिका निशा गहलोत का कहना है कि 11 फरवरी को महिला आई थी, तब सर्वर डाउन था। थोड़ी देर में वह वापस आई और रुपए विड्रॉल की बात बताई। सर्वर डाउन होने से कियोस्क से रिपोर्ट नहीं निकल पा रही थी। चूंकि वो दो-तीन कियोस्क पर गई थी, इसलिए यह कन्फर्म नहीं था कि रुपए किस कियोस्क से विड्रॉल हुए। मेरे कियोस्क पर उस दिन 8,500 रुपए एक्स्ट्रा आ रहे थे। फिर मेरे कियोस्क आईडी से ही विड्रॉल होने का बीओबी से कंफर्मेशन आया तो राशि लौटा दी। उधर, एसबीआई की गोगुंदा ब्रांच के मैनेजर पंकज कुमार गोयल ने कहा कि मुझे जब शिकायत मिली तो मैंने सभी कियोस्क व छतरी बाई को बुलाकर सुनवाई की लेकिन किसी भी कियोस्क के यहां से 11 फरवरी का 10 हजार का ट्रांजेक्शन नहीं दिखा।

भारत का सबसे विश्वसनीय न्यूज ऐप
इन्स्टॉल करें दैनिक भास्कर और पाएं लोकल न्यूज
GET IT ON Google Play

100 + cases registered

20 + cases resolved

INR 3 Lakh worth mediations

MVP Developed

For cases that are to do with banking correspondents, built a minimum viable product that can create the ecosystem for identification and redressal. SOPs for redressal included.

Fighting Financial Fraud

MVP FOR BANKING CORRESPONDENTS AND FINANCIAL FRAUD:

Banking correspondents: the problem

Banking correspondents will often ask for multiple uses of someone's biometric information, going on to withdraw more money than they were asked to and pocketing what is extra.

Enabling identification

Conflict of interest in that those who should provide transaction histories perpetuate financial fraud.

Identification

Clinics to print histories, door to door meetings to build awareness.

Grievance Redressal

Accompanying those aggrieved to seek accountability and demand redressal, accessing formal redressal mechanisms.

Fighting Financial Fraud

POTENTIAL FOR FURTHER INTERVENTION

Credit provision: the problem

Officers do not provide appropriate proof of payment, leaving the customer with no way to prove they paid when credit histories report delinquency: if the customer finds out

Officers give loans and mislead customers into giving them the money, then abscond. Credit histories report delinquency

Savings products: the problem

92%

Households (of 963) save at home or not at all

152

Reported instances of money lost in a ponzi scheme

Various ponzi schemes are already being revealed. Identification of the right sources for savings is key

INR 29,000

Average amount lost

*Data is based on a survey conducted by Shram Sarathi

Fighting Financial Fraud

What we hear from ground about current micro-credit providers / MFIs:

Lack in transparency

"I'd paid an installment but then I was made to fill it again"

"First they say interest will be 2.5% then they increase it to 3%"

"They'll charge penalty after penalty if we don't pay installments"

33%

respondents say rules for loans were not explained

Lack in redress

34%

respondents say they don't have the phone number for the loan officer who collects installments

We haven't seen the company, where do we go?

55%

respondents say they don't have the phone number for the company who gave them a loan

*Data is based on a survey conducted by Shram Sarathi

Fighting Financial Fraud

622
Reported instances of the use of abusive language

15%
Believe this is complaint worthy

58
Reported instances of threats of physical violence

19%
Believe this is complaint worthy

26
Reported instances of being forced to sell possessions by loan officers/group members

11%
Believe this is complaint worthy

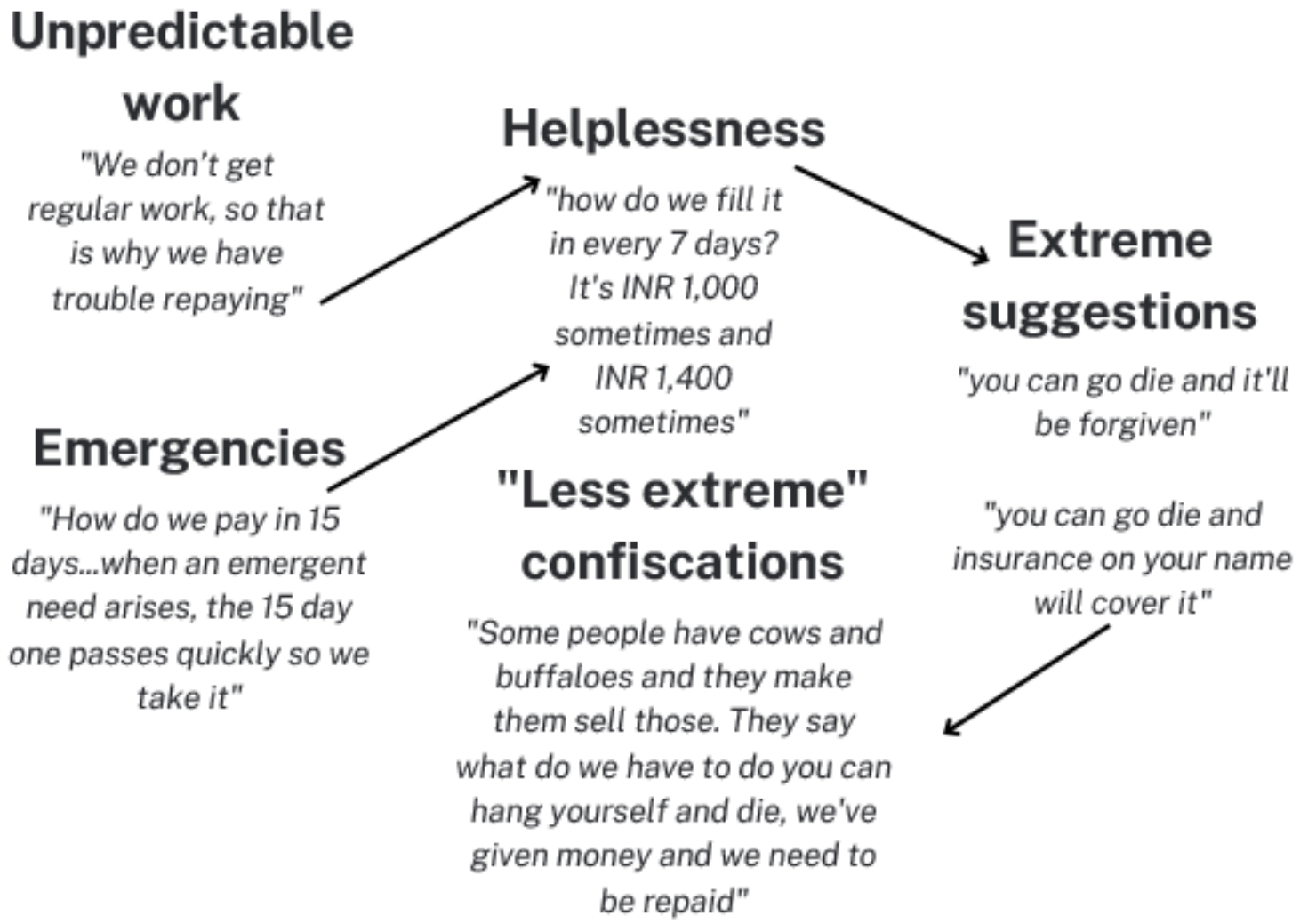

*Data is based on a survey conducted by Shram Sarathi

Financial & digital literacy clinic (FDLC)

Financial & digital literacy clinic

FINANCIAL AND DIGITAL LITERACY CLINIC (FDLC)

- Access to formal financial services and reduced dependence on informal financial systems.
- Improved financial decision making, stability and reduced poverty.
- Empowerment and contribution to local economic development.

- Promoted the idea of financial and digital literacy clinics in early 2022.
- Aim is to make the community more visible and participate in official financial services.
- Field-based strategy with clinics providing services relating to banking, insurance, and financial literacy.

SERVICES IN FDLC

Banking - Cash withdrawal & Deposit
UPI training
Linking mobile number with bank account
Passbook printing
KYC update & correction
Resuming dormant bank account

Insurance - PMSBY, PMJJBY, Chiranjeevi

Financial fraud mediation

OUR PRESENCE AND TARGET AUDIENCE

Migrant workers and their families located in Southern Rajasthan, majority of them coming from tribal families. We have our branches in Gogunda, Bhabrana and Kherwara to assist these families

FDLC – Success stories

दैनिक भास्कर उदयपुर जिला 10-06-2023

मग्गा में वित्तीय और डिजीटल साक्षरता क्लिनिक का उद्घाटन

पहले ही दिन सामने आए वित्तीय धोखाधड़ी के 10 मामले

भास्कर न्यूज | सायरा

सिंघाड़ा ग्राम पंचायत के मग्गा गांव में एंजेल वन की शेफाली हसीजा व राजस्थान श्रम सारथी के सीईओ अजय कुमार शर्मा ने वित्तीय व डिजीटल साक्षरता क्लिनिक का उद्घाटन किया। श्रम सारथी के किशन गुर्जर ने बताया कि गोगुंदा उपखंड क्षेत्र में ज्यादातर परिवार मजदूरी पर आश्रित है तथा परिवारों में अशिक्षितों की संख्या अधिक है। सूचना एवं क्रांति के युग में वित्तीय लेने-देन डिजीटल माध्यमों से होने लगा है। ऐसे में अशिक्षित लोग दूसरों पर निर्भर हो गए है। इनकी निर्भरता का फायदा उठाकर कई लोग इनके साथ धोखाधड़ी कर वित्तीय नुकसान पहुंचाते है। लोगों को वित्तीय धोखाधड़ी से बचाने और उन्हें वित्तीय व डिजीटल साक्षर बनाने के लिए क्लिनिक का संचालन किया जा रहा है।

शुक्रवार को मग्गा में आयोजित क्लिनिक में आए लोगों को वित्तीय शिक्षण प्रदान करते हुए वित्तीय धोखाधड़ी के बारे में जागरूक रहने, बैंक बीमा करवाने व बचत की जानकारी दी गई। क्लिनिक में 40 लोगों का प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा किया गया व 20 लोगों के प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा किए गए। 100 से अधिक लोगों ने अपनी बैंक पासबुक की प्रिंट करवाई व स्टेटमेंट प्राप्त किया। किशन गुर्जर ने बताया कि एम एफआई के ऋण धारक 25 लोगों ने अपना ऋण रिकॉर्ड निकलवाया। क्लिनिक में पहले दिन 10 से अधिक वित्तीय धोखाधड़ी के केस सामने आए।

दैनिक नवज्योति AasPaas - 03 Dec 2022 - Page 8

बीमा क्लेम में मिले 2 लाख रुपए

क्लेम राशि मिलने के बाद परिवार में छाई खुशी

न्यूज सर्विस/नवज्योति, झल्लारा। झल्लारा तहसील क्षेत्र के हड़मतिया निवासी एक परिवार मुखिया की मौत के बाद पीएमजेजेबीवाइ के तहत मिलने वाले क्लेम राशि के लिए भटक रहा था। तभी अचानक उसकी मुलाकात श्रम सारथी से हो गई। अचानक में हुई यह मुलाकात इस परिवार के लिए बहुत खास हो गई। श्रम सारथी के सहयोग से महिला को कुछ दिन में ही क्लेम राशि मिल गई। जिसे पाकर पीड़ित महिला की आंख से छलक निकले। जानकारी अनुसार हड़मतिया निवासी लालसी मीना पत्नी वक्ता मीणा ने एसबीआई की भवराना शाखा में पीएमजेजेबीवाइ बीमा करवाया था, लासमी की 4 जून 22 को बीमारी से मृत्यु हो गई। वहीं पूर्व में वक्ता मीणा की भी मौत हो चुकी थी। लालसी के परिवार वालों को यह तो मालूम था कि पति का 330 रु का बीमा किया है, पर यह बीमा चालू है या बन्द जिसकी जानकारी प्राप्त करने परिवार जन एसबीआइ की भवराना शाखा आए तो पता चला बीमा की राशि बैंक डायरी में 330 रुपए पीएमजेजेबीवाइ के रूप में कटे थे। बैंक अधिकारियों ने बताया कि इसका बीमा चालू है। इसके दस्तावेज जमा करवाने पर क्लेम राशि मिलने की जानकारी दी। लालसी के परिवार वालों ने सभी दस्तावेज बैंक में जमा करा दिए। वैसे तो अधिकतम यह बीमा पास होने का एक निश्चित समयावधि होती है, पर जब दो से तीन माह होने के बाद भी कोई जानकारी नहीं मिली तो परिवार जनों ने बैंक में पता किया। जिस पर बैंक द्वारा उनकी कार्रवाई कर दिए जाने व पैसे आ जाने की बात कही। इस दौरान श्रम सारथी बैंक बीसी से संबन्धित बात करने के लिए बैंक गए थे। तभी उनको यह जानकारी मिली। श्रम सारथी ने शाखा प्रबन्धक महावीर पंकज से इस बारे में जानकारी ली। बैंक प्रबंधन ने बीमा को पास करवाने में इस ग्राहक को मदद करने को कहा गया। बैंक द्वारा जो बीमा कंपनी को भेजे दस्तावेजों को देख कर श्रम सारथी ने टोल फ्री नंबर पर संपर्क किया। जहां से एक मेल आईडी मिली। इस पर मेल किया तो यहां से कोई संतोषप्रद जवाब नहीं मिला। श्रम सारथी ने लीड बैंक की मेल आईडी पर मेल कर इसकी शिकायत की तो काफी प्रयास के बाद आखिर सफलता मिली। गुरुवार को दो लाख रु की राशि नॉमिनी को खाते में जमा की गई। बताया गया कि लालसी के पति की पूर्व में मृत्यु हो चुकी है लालसी की एक छोटी लड़की है यह राशि लालसी के देवर सुरेश के खाते मे जमा की गई है। सुरेश ही अभी इस लड़की का पालन पोषण कर रहा है। सुरेश से पास ही बीमा क्लेम राशि को बच्ची के नाम से एफडी करवाने की अपील की। इस प्रक्रिया मे शाखा प्रबन्धक महावीर पंकज और श्रम सारथी से भेरूलाल मीणा, कौशिक सालवी और श्रम सारथी शाखा प्रबन्धक विष्णु बुनकर ने सहयोग दिया।

दैनिक भास्कर उदयपुर जिला 16-04-2023

नॉमिनी के खाते में 2 लाख रुपए

भास्कर न्यूज | सायरा

क्षेत्र की भानपुरा ग्राम पंचायत के बागड़ गांव की कंचन पत्नी हमेर लाल गमेती को प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना के तहत 2 लाख रुपए मिले। इसकी जानकारी शुक्रवार को भानपुरा के राजीव गांधी सेवा केंद्र में आयोजित वित्तीय व डिजिटल साक्षरता शिविर में दी गई।

जानकारी के अनुसार हमेर लाल पुत्र शंकर लाल गमेती दिहाड़ी मजदूर था, जिसने 6 माह पूर्व पीएमजीजीबीवाई के तहत बैंक खाते से बीमा करवाया था। एक माह पूर्व उसकी बीमारी के कारण मृत्यु हो गई। पत्नी कंचन को बीमे के बारे में जानकारी नहीं थी। क्षेत्र में कार्य कर रही सामाजिक संस्था श्रम सारथी के प्रबंधक किशन गुर्जर ने बताया कि श्रम सारथी द्वारा भानपुरा में वित्तीय व डिजिटल साक्षरता क्लिनिक आयोजित किया गया था, उसी दौरान हमेर लाल की मृत्यु का मामला सामने आया। जांच करने पर उसके बीमा होना पाया गया। तब उसके दस्तावेज पूर्ण करवाकर बीमे की राशि के लिए क्लेम की कार्रवाई की गई और बीमा राशि 2 लाख रुपए उसके बैंक खाते में जमा हो गए। शुक्रवार को शिविर में लोगों को वित्तीय व डिजिटल बैंकिंग की जानकारी देने के साथ ही हमेर लाल व कंचन गमेती को मिले लाभ की कहानी भी बताई गई। इस दौरान श्रम सारथी के साथी मन्नाराम भील, विष्णु ऐके, एसबीआई शाखा प्रबंधक मनीष कुमार व ग्रामीण मौजूद थे।

Discussion & Closing Remarks